

अटारी, कोलकाता द्वारा पशुओं की गांठदार त्वचा (लम्पी स्किन) और अन्य उभरते वायरल रोगों पर संगोष्ठी आयोजित

22 सितंबर, 2023, कोलकाता

भाकृअनुप- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता ने कृषि विज्ञान केंद्र प्रणाली में उत्प्रेरित परिवर्तन लाने के लिए शुरू की गई संगोष्ठी श्रृंखला के तहत पशुओं की गांठदार त्वचा (लम्पी स्किन) और अन्य उभरते वायरल रोगों पर एक संगोष्ठी आज हाइब्रिड मोड में आयोजन किया। अटारी कोलकाता के वैज्ञानिकों के अलावा पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार, झारखंड और उत्तर पूर्वी क्षेत्र के कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

संस्थान के निदेशक तथा संगोष्ठी श्रृंखला के संयोजक डॉ. प्रदीप डे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इन कार्यक्रमों के आयोजन एक टिकाऊ, लचीला, न्यायसंगत और पौष्टिक खाद्य प्रणाली प्राप्त करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने क्षेत्र में मवेशियों की वायरल रोगों के समस्याओं पर प्रकाश डाला और इन बीमारियों के प्रसार को रोकने के लिए 'वन हेल्थ' अवधारणा पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि बेहतर पोषण, पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन और जैव सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है।

डॉ. एस.के. बिस्वास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली ने बीमारी के वैश्विक परिदृश्य को चित्रित करने के बाद गांठदार त्वचा रोग के एटियलजि, महामारी विज्ञान, सीरो-निगरानी, निदान, नियंत्रण और रोकथाम पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बीमारी को अधिक कुशल तरीके से पहचानने और नियंत्रित करने के लिए ज्ञान साथ साथ जागरूकता पर जोर दिया।

भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान- पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख डॉ. अर्नब सेन ने उभरती वायरल और जूनोटिक बीमारियों के वर्तमान परिदृश्य को प्रस्तुत किया। उन्होंने पशु-मानव इंटरफेस की क्रमिक बेहतर रेखा के संदर्भ में जूनोटिक रोगों से निपटने के लिए आने वाले दिनों की तैयारियों पर जोर दिया। उन्होंने वर्तमान वैश्विक संदर्भ में बीमारियों के खतरनाक रूप से फैलने की गति का भी उल्लेख किया।

तदुपरांत 'वन हेल्थ' और क्षेत्र में मवेशियों पालन की भविष्य की दिशा विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। प्रश्नोत्तरी सत्र के दौरान प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान भी किया गया। बैठक में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों और क्षेत्र के सभी कृषि विज्ञान केंद्र प्रमुखों तथा मत्स्य वैज्ञानिकों ने भाग लिया। डॉ. अभिजीत हालदार, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. एस.के. मंडल, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

